प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

पंतनगर में विकसित जननद्रव्य से मिलेंगे सितम्बर में भी आम

पंतनगर। 06 सितम्बर, 2018। पंतनगर विश्वविद्यालय के उद्यान वैज्ञानिकों द्वारा पिछले कुछ वर्षों से देर से पकने वाले बारहमासी व अन्य प्रकार के आमों के जननद्रव्यों पर शोध किया जा रहा था, जिसके परिणाम स्वरूप अब उन्हें आम की देर से पकने वाला जननद्रव्य विकसित करने में सफलता प्राप्त हुई है। इस जननद्रव्य के आमों का लुत्फ सितम्बर माह में लिया जा सकेगा तथा किसानों को इसके बाजार में दाम भी अच्छे मिलेंगे, जिससे उनकी आय में वृद्धि होगी।

भारत में आम की लगभग 1200 किस्में पाई जाती हैं। इनमें से उत्तरी भारत में प्रायः 8–9 किस्मों का व्यसायिक स्तर पर उत्पादन किया जाता है। इन सभी आम की किस्मों के फल जून से जुलाई तक पककर तैयार हो जाते हैं। लेकिन अगस्त से सितम्बर तक पकने वाली कोई भी किस्म मैदानी क्षेत्र के लिए उपलब्ध नही है। पंतनगर विश्वविद्यालय के उद्यान विज्ञान विभाग में फलों पर अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना के अन्तर्गत आम पर शोध कर रहे वैज्ञानिकों द्वारा अगस्त से सितंबर तक पकने वाले जननद्रव्य (किस्म) को विकसित किया गया है, जिससे एक तरफ सितम्बर माह तक आम की उपलब्धता बनी रहेगी, वहीं दूसरी तरफ किसानों कौ आय में भी सकारात्मक वृद्धि होगी।

उद्यान अनुसंधान केन्द्र के संयुक्त निदेशक तथा आम वैज्ञानिक, डा. अशोक कुमार सिंह, ने बताया कि शोध कार्य के प्रारंभिक चरण में 19 जननद्रव्यों (जर्मप्लाजम) को चिन्हित किया गया है। इनमें से पांच जननद्रव्य, यथा पीएमएसएस-1,17, 20, 24, और पीएमसीएस-3 देर से पकने वाले, सात जननद्रव्य, यथा पीएमएसएस-19, 21, 25, 26, 27, 28, और 29 बारहमासी, दो जननद्रव्य, यथा पीएमएसएस-9 व 14 रंग युक्त, दो जननद्रव्य पीएमएसएस-11 एवं 18 अचार के योग्य तथा तीन अन्य जननद्रव्य पीएमएसए-3, 8 और 15 अच्छी गुणवत्तायुक्त उगाने के लिए उपयुक्त पाये गये हैं। इनमें से जननद्रव्य पीएमएसएस-1 (पंत आम-1) अगस्त के अंतिम सप्ताह से सितंबर के प्रथम सप्ताह तक पककर तैयार हो जाता है। फलों कि गुणवत्ता भी उत्तम है। फलों का औसत वजन 230–260 ग्राम, टी.एस.एस. 18.5 से 19.0 प्रतिशत तथा अम्लता 0.13 से 0.15 प्रतिशत पाई गई है। इस जननद्रव्य में शर्करा एवं अम्ल उचित अनुपात में पाया गया है। इस प्रकार की किस्म के उत्पादन से आम की उपलब्धता लंबे समय तक बनी रहेगी तथा इसके उत्पादन से बागवान एवं किसान अधिक आय भी प्राप्त कर सकते हैं। इस जननद्रव्य के पंजीकरण की कार्यवाही प्रारम्भ कर दी गई है तथा अनुमोदन से संबंधित सभी औपचारिकताएं पूर्ण करने के उपरांत पीएमएसएस-१ (पंत आम-1) को उद्यान अनुसंधान केन्द्र, पत्थरचट्टा, पर तैयार कर बागवानों एवं किसानों को उपलब्ध कराया जाएगा।

देर से पकने वाले आम के जननद्रव्य पीएमएसएस-1 के समक्ष इसकी विशेषताओं के बारे में जानकारी देते डा. अशोक कुमार सिंह।